



आर.एन.जॉ.नं.- UPHIN/2009/44666

राष्ट्रीय दिनदी दैनिक

सत्ता एक्सप्रेस



की.ए.वी.वी. नई विभागी एवं राज्य सचिवालय इतापालन नाम्बला प्राप्त

पृष्ठ 12 | समय : 244

मान्यता देश, दिनांक 20 जून 2021

Email: sattarexpress@rediffmail.com

पृष्ठ 4 | समय : 140 रुपये

आय, जल संरक्षण और पौष्टिक आहार हेतु वर्षा ऋतु में करे मछली पालन- डॉ आनंद स्वरूप श्रीवास्तव

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर। घंट्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. डॉ. आर. सिंह के निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के मत्स्य पिण्डेश्वर डॉ. आनन्द रथ्यरूप श्रीवास्तव, प्रभारी मत्स्यकी ने बताया कि वर्षा ऋतु मत्स्य पालन व्यवसाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। इस व्यवसाय से अच्छी आमदनी के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है तथा जल संरक्षण भी होता है। कोरोना लॉक डाउन के कारण हुई आर्थिक छति की भरपाई के लिये इस समय का यदि मत्स्य पालक सटुपयोग कर ले तो मछली पालन से अच्छी आय अर्जित की जा सकती है। चूंकि अधिकांश मछलियां वर्षा ऋतु में प्रजनन करती हैं और इनके बच्चे जिन्हें हम प्राईया जीरा कहते हैं तैयार होते हैं। मत्स्य नर्सरी में इनका संचय कर मत्स्य अंगुलिका तैयार की जाती है। यही मत्स्य अंगुलिका का बरसात के समय संचय कर मत्स्य उत्पादन किया जाता है। यह सब कार्य वर्षा ऋतु में ही किये जाते हैं। मछली पालन से एक और जहां अच्छी आय के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है वही दूसरी ओर जल संचय तथा भूमिगत जल के स्तर में बढ़ी भी होती है। मत्स्य विभाग के अंकड़ों के अनुसार 2018-19 में प्रदेश में मछली का की उत्पादकता लगभग 4500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर

थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगभग 6,62000 मीट्रिक टन था। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान भाई मत्स्य पालन के साथ-साथ बलाख, उद्यान, पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने बताया की मछली एक शारीरिक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुखाच्य होती है। और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि गांव क्षेत्र में कृषक भाई अनुपयोगी लालाबों की सफाई करने के उपरांत उसमें मत्स्य अंगुलिकाओं का संचय करे। उन्होंने बताया की वर्षा की मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त है। मत्स्य व्यवसाय एक श्रम प्रदान व्यवसाय है इस व्यवसाय में कम पूँजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि मछली पालने के लिए सबसे पहले लालाबों में उपरिथित खरपतवार की सफाई कर ले। लालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी, लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं। अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे फरनेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर लालाब में प्रयोग कर

सफाई करनी चाहिए तथा बंधे आदि दुरुस्त कर लेना चाहिए। उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़ायार में जल की छारीयता का विशेष महत्व है। मछली का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की छारीयता 7.5-8.5 तथा घुलित ऑक्सीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है जल की उत्पादकता हेतु छारीयता का निर्धारण करने के लिए गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने बताया कि चूना जल की छारीयता का संतुलन करता है। साथ ही साथ मछलियों में होने वही अदिकांश बीमारियों से बचाव भी होता है। वही गोबर की खाद से मछली का प्राकृतिक भोजन जिसे प्लेकटान कहते हैं उत्पन्न होता है। परंतु जब लालाब में वैज्ञानिक तरीके से मछलियों को अधिक संख्या में पाला तो उनके भोजन की अतिरिक्त व्यवस्था करनी होती है। इसके लिए सरतो की खली और धान के कना का 50-50 प्रतिशत (वजन) के हिसाब से भोजन के लिए प्रयोग करते हैं। इससे मछलियों को पौष्टिक आहार प्राप्त होता है और अच्छी बढ़ायार मिलती है। उन्होंने कहा कि जब लालाब की तैयारी हो जाए तो मत्स्य विभाग के माध्यम से मछली के बच्चों जिन्हें अंगुलिका कहते हैं, की बुकिंग करा ले। उन्होंने बताया कि आमतौर पर मछली पालन हेतु भारतीय मछली

मेजर कॉर्प (रोहू कतला और नैन) और विदेशी प्रजाति में कॉमन कार्प, ग्रास कॉर्प और सिल्वर कॉर्प का चयन सबसे उपयुक्त रहता है। आजकल शहरों में पंगेसियस मछली की भी बहुत मांग है, मत्स्य पालक समय की मांग के अनुसार पंगेसियस मछली का अवश्य उत्पादन करे। मत्स्य अंगुलिका जितनी बढ़ी हो गी उतना उपयुक्त होगा छोटे बच्चों में मृत्यु दर होना स्वाभाविक है। वर्षा ऋतु में एक बात का मुख्य रूप से ध्यान रखना चाहिए, चुकी मछली पानी में घुलित ऑक्सीजन का प्रयोग अपने इवसन के लिए करती है और पानी में इसकी उपलब्धता जलीय वनस्पति के प्रकाश संश्लेषण के द्वारा होती है। वर्षा ऋतु में अधिक समय तक बदली होने के कारण से कभी कभी प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया कम हो जाती है परिणाम रूपरूप ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। और मछली अपना मुंह ऊपर निकलती हुई दिखती है। यदि ऐसा हो तो पानी में उथल-पुथल करना चाहिए और ताजे पानी की फक्कारा रूप में आपूर्ति करना चाहिए जिससे यातायण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाए। डॉ. आनन्द श्रीवास्तव ने बताया की मत्स्य पालक वैज्ञानिक विधि से मछली पालन करके एक हेक्टेयर लालाब से प्रतिवर्ष ८-१० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर लालाब में प्रयोग कर सकते हैं।



लखनऊ संस्करण

वर्ष-05, अंक -235
दिविया, 20 जून, 2021
पृष्ठ 12
मुक्त 3 रु⁹
लखनऊ, ओडिशा, भारतीय और विदेशी लोगों के प्रति उत्तम लोकोत्तम

For epaper → www.udainikbhaskar.com

देश का सबसे विश्वरुद्धीय अखबार

दैनिक भारत

अनुपयोगी तालाबों की सफाई कर मत्स्य अंगुलिकाओं का संघय करें, वर्षा का मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त : डॉ आनंद

बाल्कर न्यूज़

कानपुर। सीएसए के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. आनंद स्वरूप श्रीवास्तव, प्रभारी मत्स्यकों ने बताया कि वर्षा ऋतु मत्स्य पालन व्यवसाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। इस व्यवसाय से अच्छी आमदानी के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है तथा जल संरक्षण भी होता है।

कोरोना लॉक डाउन के कारण हुई आर्थिक क्षति की भरपाई के लिये, इस समय का यदि मत्स्य पालक सुधार्योग कर ले तो मछली पालन से अच्छी आय अर्जित की जा सकती है। अधिकांश मछलियों वर्षा ऋतु में प्रजनन करती हैं और इनके बच्चे जिन्हे हम प्राईं, या जीरा कहते हैं तैयार होते हैं। मत्स्य नर्सरी में इनका संचय कर मत्स्य अंगुलिका तैयार की जाती है। यही मत्स्य अंगुलिका का बरसात के समय संचय कर मत्स्य उत्पादन किया जाता है। यह सब कार्य वर्षा ऋतु में ही

किये जाते हैं। मछली पालन से एक और जहाँ अच्छी आय के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है वही दूसरी और जल संचय तथा भूमिगत जल के स्तर में वृद्धि भी होती है। मत्स्य विभाग के अंकड़ों के अनुसार 2018-19 में प्रदेश में मछली का उत्पादकता लगाभग 4500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगाभग 6,62000 पीट्रिक टन था। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान भाई मत्स्य पालन के साथ-साथ बच्च, उद्यान, पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि मछली पालने के लिए सबसे पहले तालाबों में उपरिक्षेत्र खरपतवार की सफाई कर ले। तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी, लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं। अधिक जलीय बनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे फरनेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए तथा बंधे आदि दुरुस्त कर लेना



पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि गांव क्षेत्र में कृषक भाई अनुपयोगी तालाबों की सफाई करने के उपरांत उसमें मत्स्य अंगुलिकाओं का संचय करें। उन्होंने बताया कि वर्षा का मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त है। मत्स्य व्यवसाय एक श्रम प्रधान व्यवसाय है इस व्यवसाय में कम पूँजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते हैं उन्होंने बताया कि मछली पालने के लिए सबसे पहले तालाबों में उपरिक्षेत्र खरपतवार की सफाई कर ले। तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी, लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं। अधिक जलीय बनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे फरनेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए तथा बंधे आदि दुरुस्त कर लेना

चाहिए। उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़ावार में जल की छारीयता का विशेष महत्व है। मछली का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की छारीयता 7.5-8.5 तथा घुलित आंकस्तीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है जल की उत्पादकता हेतु छारीयता का निर्धारण करने के लिए गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है उन्होंने बताया कि चूना जल की छारीयता का संतुलन करता है। साथ ही साथ मछलियों में होने वही अधिकांश बीमारियों से बचव भी होता है। वही गोबर की खाद से मछली का प्राकृतिक भोजन जिसे प्लेकटान कहते हैं उत्पन्न होता है। परंतु जब तालाब में वैज्ञानिक तरीके से मछलियों को अधिक संख्या में पाला जाता होता है तो उनके भोजन की अतिरिक्त व्यवस्था करनी होती है इसके लिए सरसों की खली और धान के कना का 50-50 प्रतिशत (बजन) के हिसाब से भोजन के लिए प्रयोग करते हैं।

जल संरक्षण और पौष्टिक आहार के लिए वर्षा ऋतु में करें मछली पालन

□ भारतीय बाजारों में रोहू, कतला, नैन और विदेशी प्रजाति में कॉमन कार्प, ग्रास कॉर्प की बहुत डिमांड

कानपुर 19 जून। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डा. डी.आर. सिंह के निर्देश के त्रैम में आज विश्वविद्यालय के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव ने बताया कि वर्षा ऋतु मत्स्य पालन व्यवसाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। इस व्यवसाय से अज्ञी आमदनी के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है तथा जल संरक्षण भी होता है। कोरोना लॉकडाउन के कारण हुई आर्थिक क्षति की भरपाई के लिये मत्स्य पालक से अज्ञी आय अर्जित की जा सकती है। अधिकांश मछलियां वर्षा ऋतु में प्रजनन करती हैं और इनके बजे जिन्हें हम फाई, या जीरा कहते हैं तैयार होते हैं। मत्स्य नरसी में इनका संचय कर मत्स्य अंगूलिका तैयार की जाती है। वही दूसरी ओर जल संचय तथा भूमिगत जल के स्तर में वृद्धि भी होती है। मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार 2018 -19 में प्रदेश में मछली की उत्पादकता लगभग 4500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगभग 6,62000 मीट्रिक टन था। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान भाई मत्स्य पालन के साथ-साथ बतख, उद्यान, पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि मछली एक शक्ति वर्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपार्ज्य होती है और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित

आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि गांव क्षेत्र में सबसे पहले तालाबों में उपस्थित खरपतवार की सफाई कर ले। तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी, लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं। अधिक जलीय वनस्पति होने की दर्शा में रसायनों का प्रयोग जैसे रनेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए तथा बंधे आदि दुरुस्त कर लेना चाहिए। उन्होंने बताया कि मछलियों की बढ़वार में जल की छारीयता का विशेष महत्व है। मछली का अज्ञा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की छारीयता 7.5-8.5 तथा घूलित ऑक्सीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है। जल की उत्पादकता हेतु छारीयता का निर्धारण करने के लिए गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है। सरसो की खली और धान के केना का 50- 50 प्रतिशत (वजन) के हिसाब से भोजन के लिए प्रयोग करते हैं। इससे मछलियों को पौष्टिक आहार प्राप्त होता है। उन्होंने बताया कि आमतौर पर मछली पालन हेतु भारतीय मछली मेजर कॉर्प (रोहू, कतला और नैन) और विदेशी प्रजाति में कॉमन कार्प, ग्रास कॉर्प और सिल्वर कॉर्प का चयन सबसे उपयुक्त रहता है। आजकल शहरों में पौंगसियस मछली की भी बहुत मांग है, मत्स्य पालक समय की मांग के अनुसार पौंगसियस मछली का अवश्य उत्पादन करो। उन्होंने बताया कि मत्स्य पालक वैज्ञानिक विधि से मछली पालन करके एक हेक्टेयर तालाब से प्रतिवर्ष 2 से 3 लाख की आमदनी प्राप्त कर सकते हैं।

आय, जल संरक्षण और पौष्टिक आहार हेतु वर्षा ऋतु में करें मछली पालन : डा. आनंद स्वरूप

20/06/2021 सांध्य हलचल

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉ. बैंकर डॉ. आर. सिंह के निर्देश के त्रैमासिक अन्तराल के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव, प्रभारी मत्स्यकी ने बताया कि वर्षा ऋतु मत्स्य पालन व्यवसाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। इस व्यवसाय से अच्छी आमदनी के साथ पौष्टिक आहार ग्रास होता है तथा जल संरक्षण भी होता है। कोरोना लॉक डाउन के कारण हुई जारी रखति की भरपाई के लिये, इस समय का यदि मत्स्य पालक सहुपयोग कर ले तो मछली पालन से अच्छी आय अर्जित की जा सकती है। चूंकि अधिकांश मछलियां वर्षा ऋतु में प्रजनन करती हैं और इनके बच्चे जिन्हें हम फ़ाइंड, या जीरा कहते हैं तैयार होते हैं। मत्स्य नर्सरी ने इनका संचय कर मत्स्य अंगुलिका तैयार की जाती है। यही मत्स्य अंगुलिका का बरसात के समय संचय कर मत्स्य उत्पादन किया जाता है। यह सब कार्य वर्षा ऋतु में ही किये जाते हैं। पछली पालन से एक ओर जहाँ अच्छी आय के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है वही दूसरी ओर जल संचय तथा भूगिर्वात जल के रूप में बढ़ भी होती है। मत्स्य विभाग के अंकड़ों के अनुसार

2018 - 19 में प्रदेश में मछली का को उत्पादकता लगभग 4500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगभग 6,62000 मीट्रिक टन था। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान भाई मत्स्य पालन के साथ-साथ बत्तख, उद्धान, पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने बताया की मछली एक शक्ति वर्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपाच्च दृष्टि होता है। और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैलिशियम व खनिज भी पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि गांव क्षेत्र में कृषक भाई अनुपयोगी तालाबों की सफाई करने के उपरांत उसमें मत्स्य अंगुलिकाओं का संचय करे। उन्होंने बताया की वर्षा का गौराग मछली पालने के लिए उपयुक्त है। मत्स्य व्यवसाय एक श्रम प्रधान व्यवसाय है। इस व्यवसाय में कम पूँजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर राकते हैं। उन्होंने बताया कि मछली पालने के लिए

सबसे पहले तालाबों में उपस्थित खरपतवार की सफाई कर ले। तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं। अधिक जलीय वनस्पति होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे फूरनेक्सान ४ से १० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई करनी चाहिए तथा बंधे आदि दुरुस्त कर लेना चाहिए। उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़वार में जल की छारीयता का विशेष महत्व है। मछली का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की छारिता ७.५-८.५ तथा घुलित ऑक्सीजन की मात्रा ५ मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है। जल की उत्पादकता हेतु छारीयता का निर्धारण करने के लिए गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने बताया कि चूना जल की छारीयता का संतुलन करता है। साथ ही जल मछलियों में होने वहों अधिकांश बीमारियों से बचाव भी होता है। वही गोबर की खाद से मछली का प्राकृतिक शोजन जिसे लेकटन कहते हैं उत्पन्न होता है। परंतु जब तालाब में वैज्ञानिक तरीके से मछलियों को अधिक सांख्या में पाला तो उनके शोजन की अतिरिक्त व्यवस्था करनी होती है।

१०८

हिन्दी दैनिक



विधान केसरी

...लक्ष्मण रिपोर्ट जनहित के लिए

...सावधान जनरेटर के लिए

तात्पर्य अधिकारी, टिकिट २० जन २०२१ (२०-१ ३०८ ३६५), मुख्य-२ वा तात्पर्य अधिकारी

नवनिवाचित प्रधानों ने ली शपथ...
पृष्ठ-3

हर दिन 6 लाख्य लोगों को टीका
प्रेत-14

टिवटर पर लगाम-दिल्लो

संग्रह सं

लोकसभा अध्यक्ष के दो साल पूरे होने पर प्रधानमंत्री ने की तारीफ़, कहा-

'उडन सिख' का द

आय, जल संरक्षण और पौष्टिक आहार हेतु वर्षा
ऋतु में करे मछली पालन: डॉ आनंद स्वरूप

कानपुर (विधान केसरी)। सीएसए के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह के निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव, प्रभारी मत्स्यकी ने बताया कि वर्षा ऋतु मत्स्य पालन व्यवसाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय होता है। इस व्यवसाय से अच्छी आमदनी के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है तथा जल संरक्षण भी होता है। कोरोना लॉक डाउन के कारण हुई आर्थिक छिति की भरपाई के लिये, इस समय का यदि मत्स्य पालक सदुपयोग कर ले तो मछली पालन से अच्छी आय अर्जित की जा सकती है। चूंकि अधिकांश मछलियां वर्षा ऋतु में प्रजनन करती हैं और इनके बच्चे जिन्हें हम प्राई, या जीरा कहते हैं तैयार होते हैं। मत्स्य नर्सरी में इनका संचय कर मत्स्य अंगुलिका तैयार की जाती है। यही मत्स्य अंगुलिका का बरसात के समय संचय कर मत्स्य उत्पादन किया जाता है। यह सब कार्य वर्षा ऋतु में ही किये जाते हैं। मछली पालन से एक ओर जहां अच्छी आय के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है वही दूसरी ओर जल संचय तथा भूमिगत जल के स्तर में वृद्धि भी होती है। मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार 2018 -19 में प्रदेश में मछली की उत्पादकता लगभग 4500

किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगभग 6,62000 मीट्रिक टन था। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान भाई मत्स्य पालन के साथ-साथ बत्तख, उद्यान, पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने बताया की मछली एक शक्ति वर्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपाच्च होती है। और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि गांव क्षेत्र में कृषक भाई अनुपयोगी तालाबों की सफाई करने के उपरांत उसमे मत्स्य अंगुलिकाओं का संचय करे उन्होंने बताया की वर्षा का मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त है। मत्स्य व्यवसाय एक श्रम प्रधान व्यवसाय है इस व्यवसाय में कम पूंजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते हैं उन्होंने बताया कि मछली पालने के लिए सबसे पहले तालाबों में उपस्थित खरपतवार की सफाई कर ले। तालाबों में खरपतवार जैसे जलकुंभी लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं।



CMYK





जन एक्सप्रेस

janexpresslive

लालगढ़, रायपुर, 20 जून, 2021, वर्ष : 12, अंक : 246, पृष्ठ : 12, ग्रन्ति ₹3.00/-

समाज तथा देशभूत से प्रविन्दी लाइव सिवी लाइव | www.janexpresslive.com/e-paper

‘वर्षा ऋतु’ ही नत्य पालन के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। वर्षा ऋतु मत्स्य पालन के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय है मछली पालन से जहाँ एक और अच्छी आय के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है वहीं दूसरी ओर जल संचय तथा भूमिगत जल स्तर में बढ़ भी होती है मछली एक शक्ति वर्धक और पौष्टिक खाद्य पदार्थ है जो खाने में सुपाच्य होती है तथा इसमें आवश्यक अमीनो एंसिड तथा प्रोटीन के साथ वसा, कैलिशियम व खनिज भी पाए जाते हैं। यह बात सीएसएयू मत्स्य विशेषज्ञ डॉक्टर आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव प्रभारी मत्स्यकी ने बताते हुए कहा कि गांव क्षेत्र में किसान अनुपयोगी तालाबों की सफाई करने के बाद उसमें मत्स्य अंगुलिकाओं का संचय कर मत्स्य उत्पादन कर सकते हैं यह एक श्रम प्रधान व्यवसाय है जिसे कम पूँजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित



किया जा सकता है।

उन्होंने बताया कि आमतौर पर मछली पालन के लिए भारतीय मछली मेजर कॉर्प (रोह, कतला और नैन) और विदेशी प्रजाति में कॉमन कॉर्प, ग्रास कॉर्प और मिल्वर कॉर्प का चयन सबसे उपयुक्त रहता है। आजकल शहरों में पर्गिसियस मछली की भी बहुत मांग है, मत्स्य पालक समय की मांग के अनुसार पर्गिसियस मछली का अवश्य उत्पादन करें। वर्षा ऋतु

में एक बात का मुख्य रूप से व्यान रखना चाहिये, चुकी मछली पानी में घुलित ऑक्सीजन का प्रयोग अपने श्वसन के लिए करती है और पानी में इसकी उलझता जलीय बनस्पति के प्रकाश संश्लेषण के द्वारा होती है। वर्षा ऋतु में अधिक समय तक बदली होने के कारण से कभी कभी प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया कम हो जाती है परिणाम स्वरूप ऑक्सीजन की कमी हो जाती है और मछली

वैज्ञानिक विधि से और भी बढ़ा सकते हैं मछली उत्पादन

मत्स्य विभाग के आकड़ों के अनुसार 2018-19 में प्रदेश ने मछली की उत्पादकता लगातार 4500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगातार 6,62000 मीट्रिक टन था। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है। किसान नत्य पालन के साथ-साथ बातची, उच्च, पर्याप्त और अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं।

अपना मुंह ऊपर निकलती हुई दिखती है। यदि ऐसा हो तो पानी में उथल-पुथल करना चाहिए और ताजे पानी की फलवासा रूप में आपूर्ति करना चाहिए जिससे बातावरण की ऑक्सीजन पानी में घुल जाए।



चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मत्त्य विशेषज्ञ डॉ. आनंद श्रीवास्त ने दिए किसानों को टिप्पा; ‘बारिश में करें मछली पालन, बढ़ेगी आमदनी’

कानपुर। चौदहवीं अवधि की एवं प्रौढ़तमन्त्रिये विस्तृतविद्यालय के माध्यम सिरोत्थर्या, अब्दान स्वामी श्रीकृष्णलाल ने बाहर किया गया छात्र, जल्दी एकत्र ज्यवल्लभ के लिये समझ महालक्ष्मी समझ लेता है। इस ज्यवल्लभ से अचौपी अमरदासी के मध्य पौरी अवधि एवं प्रौढ़तमन्त्रिये अवधि आगे प्राप्त होता है और जल्दी संस्कृत भी लेता है।



उन्होंने कहा कि कोरोना वाल में हीक्कियाइट के पारण हुए अधिक तरीके भरवाई के लिए इस समय का बड़ी गलत्य प्रकाश समृद्धिपन कर तो लोगोंकी पालन से अच्छे अप्रभावित हो जा सकते हैं। नई अधिकारी महिलाओं, वर्षा लग्न में प्रवर्णन करती हैं और इनके बच्चे विनों हम प्रश्न कर जायेगा कि किसका है, तिथि लगती है। मल्टी प्रोफेशनल एवं इकूलोंमें बच्चों का रास्ता अधिकारीकरण तैयार की जाती है। यही मल्टी प्रोफेशनल का वास्तव के समग्र संबंध कर सम्पूर्ण उत्तराधिकारी का जाता है। यह सब तरांग वर्षा लग्न में ही बिंदू जाती है। महिलाएं पालन से एक और जहाँ अवृद्धि अप्रभाव के साथ पौष्टिक उत्तराधिकारी प्राप्त होती है, यहाँ दूसरी अंत जाती है। अप्रभाव तथा भूमिकाएं जल्द से जल्द खो दी जाती हैं। गलत्य विभाग के अधिकारी के अनुसार, 2018-19 में ज़ोड़ने में महिलोंका कोड उत्तराधिकारी लगभग 4500 किलोइंवाट प्रति हेक्टेएक्टी भी तथा प्रैटेक्ट में उत्तराधिकारी लगभग 6,62000 घोड़ीकॉट टन था। उन्हें विवाह विविधान विविध से महिलोंकी उत्तराधिकारी को और अच्छा जा सकता है। किसान, मल्टी पालन के साथ-साथ बनाय, उत्तराधिकारी का भी कर अधिकारीका लगभग अधिक फर्म मालों हैं। उन्हें विवाह विविध

कानेस्कालन 8 से 10 किलोग्राम त्रितीयोंपर उत्तम में प्रयोग कर सकते हैं करने वाली है तथा यही अद्वितीय तुलस का लेना चाहिए। ऊर्ध्वे बलाय की मठलालीय की बजाय में जान की छापीवाल का त्रितीय मठलाल है। भजायी का अचार उत्तमतम प्रयोग करने के लिए जल की तापिति 7.5-8.5 तथा पूर्णत अधिकतम जल की ताप 5 मिलिडिग्री प्रति लिटर अप्रत्यक्ष होती है। जल की उत्तमतम का लिए छापीवाल का निपत्तिता करने को गोंदर की ताप और चुने कर प्रयोग किया जाता है। ऊर्ध्वे बलाय के दूसरा, जल की छापीवाल का मठलाल बनाया है। सबसे ही मठलालीय में होने वाली अभियंता बैंडीवालों से बचत भी होती है। गोंदर की तापिता से मालाय का इन्सुलिन खोने विसे लेनेकरन करता है, तथा यही लेने की वजह से लेनेकरन जल का उत्तम में वैशिष्ट्यक तीकरे से मालायीनी के अधिक संख्या में पाला हो जाता होता है। इसके

लिए सार्वत्री की शुद्धता और पान के कना का 50-50 अस्तित्व (वर्णन) के लिए इसके में भेजन के लिए प्रयोग करते हैं। इससे महसूलियों को पौटिक अवधार प्राप्त होता है और अपार्टमेंट काफ़िर मालिल होता है। उन्होंने कहा कि जब लकड़ी के गैरियों को लाए तो वस्त्र विकास के बाब्यों से महसूली के बच्चों जिन्हें अंतिमस्त्र करते हैं, की शुद्धता कर दें। अपार्टमेंट पर मार्हारे पालाम के लिए प्रसारण महसूली बेचना चाहती (ठेठ बक्सना ऐरे जैन) और किंवद्दी प्रजाति में बीजनान करायी, तब उन्हें और सिरमांड आर्म वर वराम सहनी लगायकर डालता है। अतः उन्हाँने इन्होंने में लालायम समझी जो भी बहुत बड़ा है, मस्त्र विकास के बाब्यों की ओर के अनुसार फैहानीय मालाहों का अलगाव उत्पन्न करे। मस्त्र अंतिमस्त्र का नियन बड़ी होती है, उन्हाँने उपर्युक्त लिखा है। लाई शुद्ध वर एक बड़ा वर मुख्य रूप में छात्रक रुक्षका चाहता है।

यह भी सर्वे ध्यान
 इन्होंने कहा कि चूंकि मालिनी, पासी मेरी छुनिज अंकमीठन का प्रबोध अपने लक्षण के लिए कहती है और पासी मेरी हाथों में उत्तमता लक्षण है तो उसके लक्षणों के प्रकाश मालिनी का कारण सर्वोच्च संकेत से होती है। वर्ता जगत् में अधिक समय लग जाती है तो कारण से काफी-कमी प्रकाश लोकोंका वर्ता प्रविष्टि का रूप हो जाती है। वर्ता जगत् लक्षण अंकमीठन की कमी हो जाती है और उसकी अपना खुला उत्तर निकलती है दृष्टिगती है। यदि ऐसा हो तो चाहे मेरा जगत् पुकार करना चाहिए और ताजे पासी की कालजात रूप में अवृत्ती करना चाहिए। तरीं बीमारी के बलात्कार की रूपरूप पाताल, वैद्यनिक विठ्ठि से मालिनी पाताल करने के लिए हेटेक्टियर तात्पुर से प्रतिविधि 2 से 3 लक्ष्य रखने की अवधारणी अपार्टमेंट से प्राप्त कर सकते हैं।



उत्तराखण्ड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) साध्य दैनिक समाचार पत्र



RNI-NO-UTTBLU200720700

जनमत टुडे

कैबिनेट मंत्री हरक
सिंह रावत ने जाहिर
की आपनी नाटाङी

वर्ष: 12

अंक: 171

देहरादून, शनिवार, 19 जून, 2021

पृष्ठ: 08

गुल्मी: 2/ए. प्रति

6 Janmat Today

उत्तर प्रदेश

Dehradun
19 June, 2021

वर्षाग्रह्यतुमेंकरेमछलीपालनःडॉ.एसश्रीवास्तव

देखा वाई (लक्ष्मा टुडे)

कानपुर, बंधुवालर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. आनन्द स्वरूप शीघ्रकालीन प्रवासी भवत्यकी ने बताया कि वर्षा ऋतु मत्स्य पालन व्यवसाय के लिए तापसी महल्लार्पण लम्घा होता है हाल व्यवसाय से अच्छी आनंदनी के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है तथा जल संख्या भी होता है कोरोना लैंकडाउन के कारण तुर्ह अधिक प्रति की भवत्यार्पण के लिए हाल स्थल का यदि भवत्य पालक संतुलयोग कर ले तो मछली पालन से अच्छी आप अकिञ्चनी जल सकती है तुकी अधिकारा मछलियां वर्षा ऋतु में प्रत्यनन करती हैं और इसके बल्ले जिन्हें दम प्रार्पण व जीरा करते हैं तैयार होते हैं भवत्य नवीनी में इनका साधय कर भवत्य अंगुलिका रीपार की जाती है यही भवत्य अंगुलियक का बरसात के समय संघय कर भवत्य

जलदान विद्या जाता है यह सब कार्य वर्षा ऋतु में ही किये जाते हैं मछली पालन से एक और जहां जल्ली आय के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है यही दूसरी ओर जल संघय लाता भूमिगत जल के स्तर में बढ़ि भी होती है भवत्य विद्या के अंतर्गत के अनुशार 2018-19 में झूटें भी मछली का की उत्पादकता लगभग 4500 किलोग्राम प्रति हेक्टेएक्टर भी तथा प्रदेश में उत्तरादन लगभग 6,82000 मीट्रिक टन वा उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है किसान भाई भवत्य जलन के साध-साध बातें, उठान, पशुपालन या अधिकारी जल अर्जित कर सकते हैं उन्होंने बताया की मछली एक तकि वर्धक एवं पौष्टिक जलाद प्रार्पण है यह जल में तुम्हारी होती है और इसमें आपश्यक अमीनों एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है इसके अधिकारी इसमें वसा,



विद्यायम व चानिज भी पाए जाते हैं जिसके बल्ले सुन्दरित आहार में मछली की विहेन उपयोगिता है भी शीतात्मा ने बताया कि गांव क्षेत्र में कृषक भाई अनुपयोगी जलावों की सफाई करने के उद्देश उल्लेख मत्स्य अंगुलियकों का संघय करे उन्होंने बताया की वर्षा का नीसम मछली जलने के लिए उपयुक्त है भवत्य व्यवसाय एक अम प्रधान व्यवसाय है इस व्यवसाय में कम पूरी लगान पर अधिकतम लाम अंतिर्दिन कर सकते हैं उन्होंने बताया कि मछली जलने के लिए

सबसे पहले जालावों में उपस्थिता व्यवसायार की सकारू कर ले तालाबों में भवत्यवार जैसे जलकुमी, लैमिना, हाइड्रिल आदि होते हैं अधिक जलीय अन्यता होने की दशा में रसायनों वा प्रयोग जैसे फर्नेशन 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेएक्टर तालाब में प्रयोग कर भवत्य करनी चाहिए तथा ऐसे अदि दुरुक्षत कर लेना याहिद उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़ावार में जल भी छारीयता वा विशेष महाव है मछली का अत्यन्त उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की आवश्यकता 7.5-8.5 तथा चुनित अवैसीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर भवत्यपक होती है जल की उत्पादकता हेतु छारीयता वा नियन्त्रण जलने के लिए गोबर की खाद से मछली का प्राकृतिक भोजन विशेष स्लैकटान कहते हैं उत्पन्न होता है परंतु यह तालाब में वैज्ञानिक तरीके से मछलियों की अधिक संख्या में पाला तो उनके भोजन की अटीरिक व्यवस्था करनी होती है इसके लिए तालाब की खाली और धान के काना का 50-50 प्रतिशत (वजन) के हिसाब से भोजन के लिए प्रयोग करती है इससे मछलियों को पौष्टिक आहार प्राप्त होता है और अच्छी बढ़ावार मिलती है उन्होंने कहा कि जब तालाब की सीधारी हो जाए तो भवत्य विद्या के माध्यम से मछली के बच्चों दिनों कंगुलियों कलहते हैं की दुर्बिन जल हो उन्होंने बताया कि आमतौर पर मछली पालन हेतु चारतीय मछली में गोबर कीर्ण (रोहु, कलह, नैन) और विवेकी फ्रान्सिस में कोम्बन कर्म, धान कीर्ण और सिलवर कीर्ण वा वर्षन सबसे उत्पादक रहता है आज कल जलहरी में पर्यावरण स्थली की भवत्य मांग है।

प्रति हेक्टेयर तालाब में मछली पालन से

2 से 3 लाख की वार्षिक आय संभव

सीएसए के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ.
आनंद स्वरूप श्रीवास्तव की मत्स्य
पालकों के लिए सलाह

■ सहारा न्यूज ब्यूरो।

कानपुर।

सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विभिन्न के मत्स्य वैज्ञानिक के वर्षा ऋतु में मत्स्यपालकों के लिए सलाह जारी की है। उन्होंने कहा है कि वैज्ञानिक विधि से मछली पालन करके एक हेक्टेयर तालाब से प्रतिवर्ष ₹ 2 से 3 लाख तक की आय आसानी से प्राप्त की जा सकती है। इस व्यवसाय से अच्छी आय के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है तथा जल संरक्षण भी होता है। मत्स्यपालक इस समय का सदुपयोग कर लें तो कोरोना लॉकडाउन के कारण हुई क्षति की भरपाई की जा सकती है।

विभिन्न के मत्स्य विशेषज्ञ डॉ. आनंद स्वरूप श्रीवास्तव ने बताया कि अधिकांश मछलियां वर्षा ऋतु में प्रजनन करती हैं। इनके बच्चे को फ्राई या जीरा कहा जाता है। मत्स्य नरसंरी में इनका संजय कर मत्स्यअंगुलिका तैयार की जाती है। इसी से बरसात के समय मत्स्य उत्पादन किया जाता है। यह सब कार्य वर्षा

संतुलित आहार है मछली

मछली एक शक्तिवर्द्धक एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ है। यह खाने में सुपाच्य होती है। इसमें आवश्यक अमीनो एसिड व प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें वसा, कैल्शियम व खनिज भी पाये जाते हैं। इन सबके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है।



डॉ. आनंद स्वरूप।

ऋतु में ही किये जाते हैं। मत्स्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार 2018-19 में प्रदेश में मछली की उत्पादकता लगभग 4500 किग्रा प्रति हेक्टेयर थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगभग 6,62,000 मैट्रिक टन था। डॉ. श्रीवास्तव ने कहा कि किसान मत्स्य पालन के साथ बतख, उद्यान, पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ भी अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि किसान अनुपयोगी तालाबों की सफाई करने खर-पतवार हटाने के उपरांत उसमें मत्स्य अंगुलिकाओं का संचय



हिन्दी दैनिक

R.N.L;UPHIN/2012/42725

हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर से प्रकाशित

पृष्ठ : 10 अंक : 59 हिन्दी दैनिक

कानपुर नविंगर 20 जून 2021

पृष्ठ : 8

मूल्य : 2 रुपये

आय, जल संरक्षण और पौष्टिक आहार हेतु वर्षा ऋतु में करे मछली पालन: डॉ ए एस श्रीवास्तव

कानपुर— हिन्दुस्तान का इतिहास—चंद्रशेखर आजाद की विश्वविद्यालय के मत्त्य विशेषज्ञ डॉ आनन्द स्वराम श्रीवास्तव, प्रभारी महस्यकी ने बताया कि वर्षा ऋतु मत्त्य पालन व्यवसाय के लिए सबसे महत्वपूर्ण समय होता है इस व्यवसाय से अच्छी आमदनी के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है तथा जल संरक्षण भी होता है कोरोना लॉकडाउन के कारण हुई आर्थिक छति की भरपाई के लिये इस समय का यदि मत्त्य पालक सदृश्योग कर ले तो मछली पालन से अच्छी आय अर्जित की जा सकती है चूंकि अधिकांश मछलियां वर्षा ऋतु में प्रजनन करती हैं और इनके बच्चे जिन्हें हम क्राई व जीरा कहते हैं तैयार होते हैं मत्त्य नरसीरी में इनका संघर्ष कर मत्त्य अंगूलिका तैयार की जाती है यही मत्त्य अंगूलिका का बरसात के समय संघर्ष कर मत्त्य उत्पादन किया जाता है यह सब कार्य वर्षा ऋतु में ही किये जाते हैं मछली पालन से एक ओर जहां अच्छी आय के साथ पौष्टिक आहार प्राप्त होता है वही दूसरी ओर जल संघर्ष तथा भूमिगत जल के स्तर में घृणि भी होती है मत्त्य विभाग के अंकड़ों के अनुसार 2018-19 में प्रदेश में मछली का की उत्पादकता लगभग 4500 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी तथा प्रदेश में उत्पादन लगभग

6,62,000 मीट्रिक टन था उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक विधि से मछली उत्पादन को और बढ़ाया जा सकता है किसान भाई मत्त्य पालन के साथ-साथ बताया, उदान, पशुपालन कर अतिरिक्त लाभ अर्जित कर सकते हैं उन्होंने बताया की मछली एक गति के लिए पौष्टिक खाद्य पदार्थ है यह खाने में सुपाच्य होती है और इसमें आवश्यक अमीनो एसिड तथा प्रोटीन भी अधिक मात्रा में पाई जाती है इसके अतिरिक्त इसमें वसा, वैश्लियम व खनिज भी पाए जाते हैं जिसके कारण संतुलित आहार में मछली की विशेष उपयोगिता है डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि मांव क्षेत्र में गृष्मक भाई अनुपयोगी तालाबों की सफाई करने के उपरांत उसमें मत्त्य अंगूलिकाओं का संघर्ष करे उन्होंने बताया की वर्षा का मौसम मछली पालने के लिए उपयुक्त है मत्त्य व्यवसाय एक अम प्राप्त व्यवसाय है इस व्यवसाय में कम पूँजी लगाने पर अधिकतम लाभ अर्जित कर सकते हैं उन्होंने बताया कि मछली पालने के लिए सबसे पहले तालाबों में उपरिक्त खरपतवार की रकाई कर ले तालाबों में खरपतवार जैसे जलकंडी, लैमिना, हाइड्रिला आदि होते हैं अधिक जलीय क्षमत्वानी होने की दशा में रसायनों का प्रयोग जैसे फसलेक्सान 8 से 10 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तालाब में प्रयोग कर सफाई



करनी चाहिए तथा बंधे आदि दुरुस्त कर लेना चाहिए उन्होंने बताया की मछलियों की बढ़ावार में जल की छारीयता का विशेष महत्व है मछली का अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए जल की छारीयता 7.5-8.5 तथा सुलिल अंकसीजन की मात्रा 5 मिलीग्राम प्रति लीटर आवश्यक होती है जल की उत्पादकता हेतु छारीयता का निर्धारण करने के लिए गोबर की खाद और चूने का प्रयोग किया जाता है उन्होंने बताया कि चूना जल की छारीयता का संतुलन करता है साथ ही साथ मछलियों में होने वाली अधिकांश शीमारियों से बचाव भी होता है वही गोबर की खाद से मछली का प्राकृतिक भोजन जिसे म्लेकटान कहते हैं उत्पन्न होता है फर्तु जब तालाब में वैज्ञानिक तरीके से मछलियों को अधिक संख्या में पाला तो उनके भोजन की अतिरिक्त व्यवस्था करनी होती है इसके लिए सरसों की खली और धान के काना का 50-50 प्रतिशत (एजन) के हिसाब से भोजन के लिए प्रयोग करते हैं इससे मछलियों को पौष्टिक आहार प्राप्त होता है और अच्छी बढ़ावार मिलती है उन्होंने कहा कि जब तालाब की तैयारी हो जाए तो मत्त्य विभाग के माध्यम से मछली के बच्चों जिन्हें अंगूलिका कहते हैं की बुकिंग करा लें उन्होंने बताया कि आमतौर पर मछली पालन हेतु भारतीय मछली मेजर कॉर्प (रोह, कलाला, नैन) और विदेशी प्रजाति में कॉमन कॉर्प, ग्रास कॉर्प और सिल्वर कॉर्प का ध्वन सबसे उपयुक्त रहता है आज कल शहरों में पंगेसियस मछली की भी बहुत मांग है मत्त्य पालक समय की मांग के अनुसार पंगेसियस मछली का अवश्य उत्पादन करे मत्त्य अंगूलिका जितनी बड़ी होगी उतना उपयुक्त होगा छोटे बच्चों में मृत्यु दर होना स्वाभाविक है वर्षा ऋतु में

एक बात का मुख्य रूप से व्यान रखना चाहिए, चुकी मछली पानी में धूलित ऑक्सीजन का प्रयोग अपने रखने के लिए करती है और पानी में इसकी उपलब्धता जलीय दार्त्ता को प्रदान करती है अंगूलिका तक बदली होने के कारण से कभी कभी प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया कम हो जाती है परिणाम स्वरूप ऑक्सीजन की कमी हो जाती है और मछली अपना मुँह ऊपर निकलती हुई दिखती है यदि ऐसा हो तो पानी में उखल पुर्यल करना चाहिए और ताजे पानी की फज्जारा रूप में आपूर्ति करना चाहिए जिससे वातावरण की ऑक्सीजन पानी में धूल जाए डॉ आनन्द श्रीवास्तव ने बताया की मत्त्य पालक वैज्ञानिक विधि से मछली पालन करके एक हेक्टेयर तालाब से प्रतिवर्ष ₹ 2 से 3 लाख की आमदनी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।